Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

10

# महिला आत्मकथाकार : अजित कौर

किर्तीमालिनी हणूमंतराव पाटील

---

**भूमिका :**

साहित्य क्षेत्र में आज तक कई महिला लेखिकाओं द्वारा काफी लेखन कार्य किया गया है। जिस तरह पुरूष लेखकों ने अपनी जीवनानुभूति एवं समाज के अध्ययन द्वारा साहित्य लिखा, उसी तरह महिला लेखिकाओं ने भी लेखन कार्य किया है। यह सब लिखकर भी महिला लेखिकाएँ पूरी तरह से संतुष्ट नहीं थी। वे अपने खुद के बारे में पूरी स्पष्टता से और परखड़ता से नहीं लिख पा रहीं थी। इसी बीच आत्मकथा विधा से वे परिचित हुई, जो विधा जीवन के यथार्थ को तथा इतंभूत इतिवृत्त को प्रकट करने में उनकी सहाय्यक सिध्द हुई। महिला आत्मकथा लेखिकाओं ने अपनी खुद की संघर्षमय कहानी और विश्व नारी विड़म्बना को आत्मकथा के जरिए प्रकट किया। उनके इस कार्य की बदोलत आज हमें विभिन्न देशों में और कई भाषाओं में लिखी महिला आत्मकथाएँ पढ़ने को मिलती है। दुनिया भर के लोग इन्हें पढ़ने के लिए उत्सुक भी दिखाई देते हैं। इसके बारे में डॉ.सरजू प्रसाद मिश्र जी कहते हैं कि,"मनुष्य में मानवीय चरित्रों एवं अनुभवों के बारे में जानने की अनबुझ प्यास होती है। आत्मकथा की विधा लेखक के ताजा तरीन अनुभवों को पाठकों तक पहुँचाने का सबसे प्रभावशाली साधन है। इस कारण आज दुनियाभर में आत्मकथा को पढ़नेवाले वर्ग की काफी तादाद दिखाई देती है।

आधुनिक समय में समाज में काफी बदलाव हुए है। नारी जीवन में भी परंपरागत जीवन पध्दति की तुलना में काफी परिवर्तन हुए है। इन परिवर्तनों को लाने के लिए जिन लोगों का योगदान रहा है, आनेवाला समय जरूर उनका ऋणी रहेगा। महिला आत्मकथाओं में परंपरागत मूल्यों औरँ आधुनिक परिवर्तनवादी विचारों के बीच चलनेवाला संघर्ष दृष्टिगोचर होता है। इसके साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मानसिक, शारीरिक धरातल पर होने वाले नारी शोषण की जानकारी मिलती है। इस तरह से नारी शोषण करनेवाले समाज से ये महिला आत्मकथाकार सीधी-सीधी टक्कर लेती हैं और अपने आप को ऐसे शोषण से मुक्त कर स्वतंत्र जीवन जीती है।

हिंदी की महिला आत्मकथाएँ और उनके जीवन की संघर्ष गाथा, समाज के लिए एक अनमोल देन है। ये लेखिकाएँ आज जिस मकाम पर पहुची हैं, उनके व्यक्तित्त्व का अभ्यास कर हम अपना व्यक्तित्त्व संवार सकते हैं। इस प्रपत्र में आत्मकथाकार अजित कौर पर चर्चा करेंगे।

**अजीत कौर : संक्षिप्त परिचय**

पुरूष सत्ताक पध्दति ने स्त्री को गुलाम और बोझ समझकर सदा सेवा में और वैâद में रखा। स्त्री सम्पूर्ण जीवन पुरूष की कैद में एक कैदी के रूप में रहती है। यह वैâदी नुमा जीवन भोगनेवाली अजीत कौर अपनी आत्मकथाओं द्वारा सच्चाई और हकीकत सुनाती हैं। 'कूडा-कबाडा'और 'खानाबदोश'आत्मकथाएँ स्पष्ट करती हैं स्त्री के असली रूप को और उसकी नियति को आखिर में रास्ता खुलता है उज्ज्वल भविष्य की ओर।

अजीत कौर जी का जन्म भारत विभाजन के समय भड़के हिन्दू-मुस्लिम दंगों की अफरा-तफरी के समय लाहौर में हुआ है। अजीत कौर जी की माताजी का नाम जसवंत कौर तथा पिताजी का नाम मक्खन सिंह बजाज था। इनकी माताजी एक गृहिणी थी तो पिताजी डॉक्टर थे, जो खुद का क्लीनिक चलाते थे। अजीत जी संपन्न पंजाबी परिवार में पैदा हुई थी। यह एक सभ्य परिवार था। परिवार में माता-पिता, दादा-दादी, भाई जसबीर सब लोग साथ-साथ रहते थे। बचपन काद खाने सा था, कहीं पर घूमने-फिरने की इजाजत न थी। "सारा दिन एक कमरे से दूसरे कमरे में बेकार और बेजार डोलती रहती। साँझ ढलते ही छत पर जाकर ढीली-सी चारपाई में धँसकर लेट जाती और डूबते सूर्य को निहारती, अपने घोंसलों की ओर लौटते कव्वों की कतारों को देखती। पड़ोस में रहनेवाली सहेली रोहिणी के साथ थोड़ा खेलती और सायकिल चलाती थी।

उस जमाने में लड़कियों को शिक्षा न दी जाती थी इसलिए अजीत जी की पढ़ाई के लिए घर पर ही मास्टर बुलाया जाता। इसके बाद सेक्रेड हार्ट स्कूल में दाखिल करवाया था। फिर स्कूल से निकालकर ज्ञानी करतारसिंह हितकारीजी के पास पढ़ाई के लिए सौंप दिया। पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षा सवा नौ वर्ष के उम्र में पास की थी। आगे चलकर बी.ए, एम.ए और बी.एड किया था।

अजीत जी बचपन से ही घरवालों के कड़ी निगरानी में पली थी। जैसे-तैसे कॉलेज जाती तो छुपकर कहानियाँ लिखती और पत्रिकाओं में छपवाती थी। इस दौरान 'बलदेव' नामक कॉलेज के प्राध्यापक से प्यार हो गया था। लेकिन किसी कारणवश शादी नहीं हो पायी। उसके बाद उनके पिताजी ने एक वर ढूँढ़ा था, जिसके साथ रस्म तो हो गयी थी, लेकिन शादी तोड़नी पड़ी थी। फिर करनाल के डॉक्टर राज के साथ शादी हो गयी। शादी के बारे में अजीत जी कहती हैं, "महीने के बाद विवाह हो गया। मैं ब्याहकर करनाल आ गई। यानी दिल्ली वाले खूँटे से रस्सी खोलकर मेरे नए मालिक मुझे करनाल ले गए।'इस तरह सारे रस्मों-रिवाज निभाकर अजीत जी ससुराल आ गयी।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved 

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

सुहागरात के दिन डॉक्टर पति ने एक अल्बम दिखाकर साफ-साफ कह दिया कि, शादी से पहले वे एक लड़की को चाहते थे और किसी कारणवश उनकी शादी न हो पायी थी। इस तरह अजीत जी को सूचित किया था, हो सकता है उस लड़की से उनके संबंध बने रहें, इसमें अजीत जी ने हो हल्ला मचाने की कोई जरूरत नहीं। सुहागरात के दिन उनके पति मुँह फेरकर खर्राटे मारते सो गए थे।

अजीत जी रोज सोते समय और सुबह उठकर घरवालों के पाँव छुआ करती थी। घर का काम-काज संभालती थी। पति कभी प्यार से बात नहीं करता और शुरू में पति-पत्नी में शारीरिक संबंध भी नहीं थे। पति के घर में मांसाहार चलता, जो अजीत जी को बनाना नहीं आता था, लेकिन पति के खातिर बनवाना सीख लिया था। कुछ दिनों बाद अजीत जी के पिता ने दिल्ली में जगा दिलावाई थी, वहाँ अजीत जी के पति ने क्लीनिक खोलकर डॉक्टरी की थी। आर्थिक तंगी चल रहीं थी, अजीत जी के नौकरी करने का प्रस्ताव पति ने रखा, जिसके लिए उनका बी.एड करवाया गया। उस समय वे पेट से थी, फिर भी कई तकलीफें उठाकर कॉलेज जाती थी। आठवें महीने में ही उनको 'अर्पणा' बेटी हुई थी। पहली बेटी के जन्मपर पति राज खफा हुए थे वे बोले, "हमारे खानदान में किसी औरत ने पहली बेटी नहीं जनी। यह कहाँ से आ गई। मनहूस।" दूध पीती बच्ची को छोड़ अजीत कॉलेज पढ़ने नहीं जाना चाहती थी, तो पति ने दूध सुखाने का इंजेक्शन दिया। कभी-कभी अजीत जी के साथ मार-पीट भी होती थी। अजीत को विवाहित जीवन में सुख नहीं था, न भौतिक सुख, न शारीरिक सुख। पति का दूसरी औरत से चक्कर था। दूसरी बार प्रसूत हुई तो बेटी 'वैâडी' पैदा हुई। दूसरी बेटी के जन्म के बाद दु:ख में बढोत्तरी हो चुकी थी। सारे दु:खों और परेशानियों से तंग आकर आखिरकार अजीत जी अपनी दोनों बेटियों को लेकर पति को छोड़कर अलग रहने लगी।

अजीत कौर जी का लेखन कार्य :

अजीत कौर जी ने अपने लेखन में कहानी संग्रह, उपन्यास, आत्मकथाएँ लिखी है। उनकी आत्मकथा 'खानाबदोश' को १९८६ का साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी मिला है।

कहानी संग्रह :

"गुलबानो; महिक दी मौत, बुतशिकन, फालतू औरत, सावीयाँ चिड़ीयाँ, मौत अलीबाबा दी, ना मारो, आपणे आपणे जंगल, नवंबर चौरासी। "

उपन्यास : धुप्प वाला शहर, पोस्टमार्टम, गौरी।

आत्मकथा : कूड़ा-कबाड़ा, खानाबदोश, तकीऐ दा पीर।

**कूड़ा-कबाड़ा**

अजीत कौर जी की आत्मकथा 'कूड़ा-कबाड़ा' यह स्त्री जीवन की व्यथा-कथा है। वह लाहौर में जन्मी, एक डॉक्टर पिता के संपन्न परिवार की बेटी है। जिस परिवार में लड़की को महत्त्वहीन और आफत समझा गया था। बचपन में भाई के जन्मपर घर में प्रफुल्लित वातावरण और लड़की के साथ दूजाभाव, भेदभाव नजर आता है। लड़की के खान-पान, रहन-सहन, उठने-बैठने, घूमने-फिरने, बोलने-चलने पर लगाई पाबंदियों से वैâदीनुमा जीवन दिखाई देता है। लड़की को शिक्षा से दूर रखा जाता है। लेकिन प्रतिभाशाली अजीत जी मौका मिलने पर अपनी पढ़ाई पूर्ण कर लेती है। जब एम.ए.के लिए दाखिला लिया जाता है, तो अजीत जी का लगाव अंग्रेजी साहित्य से होने के बावजूद अर्थशास्त्र में दाखिला लेना पड़ता है। अजीत जी मायके में पिता और भाई के कैद में वंचित और कुंठित जीवन जीती है। इस तरह बंदिशों से जीवन को भरे अजीत जी और उनकी समकालीन लड़कियों का जीवन प्रकट कर रहा है।

लेखन प्रतिभा की धनी अजीत जी, चुरा-छिपाकर साहित्य पढ़ती है, कहानियाँ लिखती है और पत्रिकाओं में छपवाती है कॉलेज में 'बलदेव' नामक प्राध्यापक से प्यार करती है। लेकिन बलदेव से शादी नहीं हो पाती। पिता ने ढूँढ़े हुए रिश्ते की जगह डॉक्टर राज से चुपचाप शादी कर लेती है। पति का किसी और लड़की से अनैतिक रिश्ता होता है, जिससे अजीत जी को कई तरह से दु:खीत होना पड़ता है। पति के क्रोध, अपमान, तिरस्कार, घृणा का भी शिकार होना पड़ता है। अजीत जी सोचती है, जिसने भी यह शादी तय की थी, उनका काम था, जहाँ लड़की ब्याह रहें है वहाँ उसका जीवन वैâसा रहेगा ? इसके बारे में सोचना उनकी जिम्मेदारी थी, लेकिन यह जिम्मेदारी किसी ने नहीं निभायी। ससुराल में कोई भी उनसे एक मनुष्य के तरह प्रेम और दया से पेश नहीं आया। उनकी ससुराल की विधवा बुआ के माध्यम से विधवा जीवन का दु:ख, दर्द स्पष्ट करती है।

पति डॉक्टर होकर पढ़ा-लिखा होकर कभी अजीत जी से इनसान के रूप में पेश नहीं आया। इतना ही नहीं तो दो लड़कियाँ होने के बाद तो हैवानियत पर उतर आया। घर से निकाल देता, मार-पीट, गाली-गलोच करता था। घर का आर्थिक खर्च संभालने के लिए अजीत जी खुद नौकरी करती थी फिर भी पति से सुख मिलने के बजाय, दु:ख और वेदनाएँ ही मिलती रही। आखिरकार लड़कियों को साथ लेकर अजीत जी पति को छोड़कर 'गर्ल्स हॉस्टेल' में रही थी। फिर स्कूल की नौकरी छोड़कर खुद की पत्रिका निकालति थी। रूपए कमाकर खुद का घर खरीद लिया था। लड़कियों को अच्छा पढ़ा-लिखा कर बड़ा किया है। छोटी बेटी 'कैंडी' का विवाह भी हुआ था, लेकिन विदेस में वह एक अपघात में जलकर मृत्यु की कोख में समा गयी। अजीत जी ने अपनी बेटी 'डौली' के साथ अपना सुख-दु:ख भरा जीवन बीता लिया।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

'कूड़ा-कबाड़ा' यह आत्मकथा नारी जीवन की करूण कहानी है। इसमें सनातनी, परंपरावादी घरों में कैदीनुमा जीवन बीतानेवाली लड़कियों की कहानी है। इसमें विधवा जीवन, युवावस्था में हुई विधवाओं की समस्याएँ और धार्मिक आडम्बरों पर न्यौछावर होनेवाली विधवाओं का अर्थहीन जीवन चित्रित है। इसमें विवाहित स्त्री, पति से अलग रहनेवाली स्त्री और सिर्फ लड़कियाँ पैदा करनेवाली स्त्री, और वे लड़कियाँ इन सब के जीवन की त्रासदी है। इसमें एक धैर्यशील और कर्तृत्ववान माँ है जो अपने बच्चों को लेकर, किसी पुरूष के सहारे के बिना जीवन निर्वाह करती है। आत्मकथा की स्त्री नायिका चीख-चीखकर कहती है, हम स्त्रियाँ कोई 'कूडा-कबाड़ा' नहीं बल्कि एक जीवित इनसान है।

**'खानाबदोश'**

'खानाबदोश' यह अजीत कौर जी की आत्मकथा का द्वितीय खंड है। पहली कथा जहाँ पर खत्म होती है और वैâडी के जलने के बाद जब अजीत जी विदेस जाती है। वहाँ की अनुभूति को वह बताती है, विदेस के लोग, अस्पताल, वहाँ के कानून वहाँ का जीवन सबसे पाठक परिचित होते हैं। जिस वक्त कैंडी जल रही थी, फायर ब्रिगेडवाले उसे बचाने के बजाए उसका 'विसा' पूछ रहे थे। अपनी कोख से जनी बेटी को खोनेवाली ममतामयी माँ के दु:ख की कहानी 'वन जीरो वन' में व्यक्त हुई है। इसे पढ़कर पाठक अजीब उलझन में पड़ता है, वह तय नहीं कर पाता कि इस पाठ को पढ़ने के बाद अजीत जी के लेखन कौशल की तारीफ करें या एक माँ के करूण हृदय की दु:ख का अंदाजा लगाये, या वैâडी के तकलिफों को महसूस करें। कुछ भी हो इन सारी बातों से अजीत कौर के मातृत्त्व, वात्सल्य और लेखन कौशल की दाद देनी पड़ती है। क्योंकि इसमें भावना, संवेदना और वेदनाओं का सूक्ष्म चित्रण हुआ है।

'खानाबदोश' यह नाम आत्मकथा को समर्पक ही है। इसके बारे में डॉ.सविता सिंह जी कहती है- "आशा-निराशा में डूबती-इतराती, सतत संघर्ष करती लेखिका बस जिए जा रहीं थी। शीर्षक सटीक है क्योंकि कभी घर का सुख जाना ही नहीं...'खानाबदोश' की जिंदगी जी।" अजीत जी बेटी, बहन, पत्नी बनकर रहीं लेकिन कहीं भी उनको स्थायी ठिकाना न मिला। शादी के बाद कहते हैं, 'पति के घर से अर्थी निकलनी चाहिए। लेकिन पति तो बात-बात पर मार-पीट कर घर से निकाल देता था, क्या सचमुच वह उनका घर था। इसलिए जिस जीवन को उम्रभर कोई ठिकाना न मिला उसे 'खानाबदोश' ही कहती है।

अपनी इस आत्मकथा में अजीत जी ने अपने प्रेमी और उनके साथ बीताए जीवन को खुले आम स्वीकारा है। प्राध्यापक 'बलदेव' जी से जीवन में पहली बार प्यार किया था। लेकिन शादी की बात को लेकर बलदेव जब असमर्थ थे और अजीत जी के पिता उनसे शादी का जिक्र कर रहे थे। 'बलदेव' ने अजीत जी को खत लिखकर अपमानित किया। इससे स्वाभिमानी अजीत जी ने भी शादी के लिए बलदेव की राह नहीं देखी और दूसरी जगह शादी कर ली। पति राज को छोड़कर जब वह अकेली रहने लगी थी, तब उनका सम्पर्क 'ओमा' से आया। "ओमा के साथ जिंदगी का जो टुकडा मैंने जिया, उसे लिखने लगूँगी तो पूरा उपन्यास लिखा जाएगा। फिर सोचती हूँ कि जिंदगी का वह टुकड़ा, जिसमें मुहब्बत की गुनगनी धूप थी, अकेलेपन का पाला और ठिठुरन थी, तीखे और तेज धुँआधार झगड़े थे, मदहोश खुशी और अलसाया सकून था, यह सात एक सालों का फासला ऐसा था कि, जिसमें मैंने कोई सत्तर बरस पार कर लिए। सात सौ वर्ष। सात नदियाँ। सात जन्म।' इससे यह पता चलता है कि, अजीत जी ने अपनी आत्मकथा का और अपने जीवन को सच्चाई से लेखन किया है। कहीं पर भी कोई छिपाव नहीं है। वह खुद अपना जीवन पाठकों के सामने रखती है, उन्हें कोई फिक्र नहीं कि, यह पढ़कर किसे अच्छा लगता है, किसे बुरा। यह उनकी घटित जीवन कहानी है, जो उन्होंने लिखी है। जब लिखी है तो पूरी ईमानदारी के साथ लिखी है बस।

निष्कर्षत: यह कह सकते हैं कि यह आत्मकथा स्त्री जीवन की कथा है। जिसमें लेखन शैली की सराहना अवश्य करनी होगी, जिस कौशल से आत्मकथा लिखी है वह काबिले तारीफ है। इसलिए इस आत्मकथा को साहित्य का अकादेमी पुरस्कार मिला है। संक्षेप में यह आत्मकथा स्त्री जीवन के हर पड़ाव के संघर्ष और युध्द की कहानी है, जो स्त्री की शक्ति को टूटने नहीं देती, बल्कि ताकत के साथ खड़े होने का बल देती है।

**संदर्भ**

(१) हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ - सरजू प्रसाद मिश्र, प्र.सं. २०११
(२) कूड़ा-कबाड़ा - अजीत कौर, प्र.सं. १९९९
(३) खानाबदोश - अजीत कौर, प्र.सं. २००१
(४) हिंदी आत्मकथा - डॉ. सविता सिंह, प्र.सं. २००९
(५) हिंदी साहित्य की कतिपय विशिष्ट महिलाएँ एवं उनकी रचनाएँ - डॉ. देवकृष्ण मौर्य, प्र.सं. २०१०